बाल्यावस्था- जीवन का अनोखा काल

बाल्यावस्था, वास्तव में मानव जीवन का वह स्वर्णिम समय है, जिसमें उसका सर्वांगीण विकास होता है। यद्यपि फ्रायड यह मानते हैं कि बालक का विकास पाँच वर्ष की आयु तक हो जाता है, लेकिन बाल्यावस्था में विकास की यह सम्पूर्णता गति प्राप्त करती है और एक परिपक्व व्यक्ति के निर्माण की ओर अग्रसर होता है। इस अवस्था में बालकों में विभिन्न आदतों, व्यवहार, रुचि एवं इच्छाओं के प्रतिरूपों का निर्माण होता है।

ब्लेयर, जोन्स व सिम्पसन के अनुसार- "शैक्षिक दृष्टिकोण से जीवन-चक्र में बाल्यावस्था से अधिक कोई महत्वपूर्ण अवस्था नहीं है। जो शिक्षक इस अवस्था के बालकों को शिक्षा देते हैं, उन्हें बालकों का, उनकी आधारभूत आवश्यकताओं का, उनकी समस्याओं एवं परिस्थितियों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए, जो उनके व्यवहार को रूपांतरित एवं परिवर्तित करती है।"

कोल व ब्रूस के अनुसार- "वास्तव में माता-पिता के लिए बाल-विकास की इस अवस्था को समझना कठिन है।"

कुप्पूस्वामी के अनुसार- "इस अवस्था में बालकों में अनोखे परिवर्तन होते हैं। जैसे- 6 वर्ष की-

Scanned with CamScanner

अवस्था में बालक का स्वभाव बहुत उग्र होता है और वह लगभग सभी बातों का उत्तर 'न' या 'नहीं' में देता है। 7 वर्ष की अवस्था में वह उदासीन होता है और अकेला रहना पसन्द करता है। 8 वर्ष की अवस्था में उसमें अन्य बालकों से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने की भावना प्रबल होती है। 9 से 12 वर्ष तक की अवस्था में विद्यालय में उसके लिए कोई आकर्षक नहीं रह जाता है। वह कोई नियमित कार्य न करके, कोई महान और रोमांचकारी कार्य करना चाहता है।"

बाल्यावस्था की मुख्य विशेषताएं-

हरलॉक ने इसे 6 से 12 वर्ष के बीच का समय माना है। इस अवस्था में ये विशेषताएं विकसित होती हैं-

1. शारीरिक व मानसिक स्थिरता- 6 या 7 वर्ष की आयु के बाद बालक में शारीरिक और मानसिक स्थिरता आ जाती है। यह स्थिरता उसकी शारीरिक व मानसिक शक्तियों को दृढ़ता प्रदान करती है। फलस्वरूप. उसका मस्तिष्क परिपक्व स और वह स्वयं वयस्क-सा जान पड़ता है। इसलिए रॉस [Ross] ने बाल्यावस्था को मिथ्या-परिपक्वता क काल बताते हुए लिखा है- "शारीरिक और-

Scanned with CamScanner

मानसिक स्थिरता बाल्यावस्था की सबसे महत्
-पूर्ण विशेषता है।"

बाल्यावस्था के विकास का महत्व अत्यधिक है। इस अवस्था में विकास का अध्ययन अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रकट करता है

कैरल के अनुसार- "बालक के शारीरिक विकास और उसके सामान्य व्यवहार का सह-सम्बन्ध इतना महत्व पूर्ण होता है कि यदि हम समझना चाहें कि भिन्न-भिन्न बालकों में क्या समानताएं हैं, क्या भिन्नताएं हैं, आयु-वृद्धि के साथ व्यक्ति में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं, तो हमें बालक के शारीरिक विकास का अध्ययन करना होगा।"

2. मानसिक योग्यताओं में वृद्धि- बाल्यावस्था में बालक की मानसिक योग्यताओं में निरन्तर वृद्धि होती है। वह विभिन्न बातों के बारे में तर्क और विचार करने लगता है। वह साधारण बातों पर अधिक देर तक अपने ध्यान को केन्द्रित कर सकता है। उसमें अपने पूर्व अनुभवों को स्मरण रखने की योग्यता उत्पन्न हो जाती है।

3. जिज्ञासा की प्रबलता- बालकों में जिज्ञासा बहुत प्रबल होती है। वह जिन वस्तुओं के सम्पर्क में आते हैं, उनके बारे में प्रश्न पूछकर हर तरह की जानकारी

Scanned with CamScanner

प्राप्त करना चाहते हैं। उनके ये ~~प्रश्न~~ प्रश्न शैशवावस्था के साधारण प्रश्नों से भिन्न होते हैं। अब वह यह नहीं पूछता है कि- "वह क्या है?" इसके विपरीत वह पूछता है- यह ऐसे क्यों है? और यह ऐसे कैसे हुआ है?

4. वास्तविक जीवन से सम्बन्ध- इस अवस्था में बालक शैशवावस्था के काल्पनिक जगत का परित्याग करके वास्तविक जगत में प्रवेश करता है। वह प्रत्येक वस्तु से आकर्षित होकर, उसका ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।

स्ट्रैंग के शब्दों में- "बालक अपने को विशाल संसार में पाता है और उसके बारे में जल्द से जल्द जानकारी प्राप्त करना चाहता है।"

5. रचनात्मक कार्यों में आनन्द- बालक को रचनात्मक कार्यों में विशेष आनन्द आता है। वह घर से बाहर किसी प्रकार का कार्य करना चाहता है, जैसे- बगीचे में काम करना अथवा औजारों से लकड़ी की वस्तुएं बनाना। इसके विपरीत, बालिका घर में ही कोई न कोई कार्य करना चाहती है, जैसे- सीना, पिरोना या कढ़ाई करना आदि।

Scanned with CamScanner